بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصار اللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob:9682536974, E-Mail.: ansarullah@qadian.in   23.12.2022   محلہ احمدیہ قادیان143516ضلع گورداسپور (پنجاب) انڈیا

क़ादियान तथा कुछ अफ़्रीक़ा के देशों में जलसा सालाना के शुभारम्भ पर जमाअत के दोस्तों को ईमान व यक़ीन एवं निष्ठा व आज्ञाकारिता में उन्नति करने के उपदेश।

सारांश ख़ुत्बः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 23 दिसम्बर 2022, स्थान मस्जिद मुबारक

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ إِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ.

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु ने फ़रमाया- आज से क़ादियान तथा कुछ अफ़्रीक़ी देशों में जलसा सालाना शुरु हो रहे हैं। अल्लाह तआला प्रत्येक देश के जलसे को हर एक दृष्टि से बरकत वाला बनाए। इन्शाल्लाह तआला इतवार को जलसे के अन्तिम दिन क़ादियान के जलसे से सम्बोधन होगा, इसमें अन्य शेष सात आठ अफ़्रीक़ी देश भी शामिल होंगे। कोशिश होगी कि उन सब देशों को एम टी ए के द्वारा सीधे जोड़ दिया जाए। आज उन देशों में सब एक जगह एकत्र होकर ख़ुत्बः सुन रहे होंगे इस लिए इस वातावरण में मैंने उचित समझा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के शब्दों में वे बातें पेश करूँ जिनमें आप अलै. की नियुक्ति एवं जमाअत के उद्देश्य के बारे में बयान किया गया है और विभिन्न उपदेश दिए हैं। अनेकों नौमुबाय तथा नई पीढ़ी के अहमदी इन जलसों में शामिल होंगे, अतः ये बातें उनके लिए भी जानना अनिवार्य हैं ताकि ये इन दिनों में अपने ईमान व यक़ीन तथा निष्ठा एवं वफ़ा में उन्नति करने का प्रयास करें और अल्लाह तआला की सहायता मांगते हुए आप अलै. की नियुक्ति तथा अपने दायित्वों का बोध प्राप्त करें।

अहमदिया सिलसिले की स्थापना का उद्दश्य क्या था तथा क्यूँ उस ज़माने में इसकी स्थापना आवश्यक थी? हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि यह ज़माना कैसा मुबारक ज़माना है कि ख़ुदा तआला ने इन विकट दिनों में केवल अपनी कृपा से आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अस्तित्व का अभिव्यक्त करने के लिए यह पवित्र निश्चय फ़रमाया कि प्रोक्ष से इस्लाम की सहायता एवं समर्थन की व्यवस्था फ़रमाई तथा एक सिलसिले को स्थापित किया। जो लोग इस्लाम की चिंता अपने दिलों में रखते हैं वे बताएँ कि क्या कोई ज़माना इस ज़माने से बढ़ कर हुआ है जो इतने अपशब्दों के साथ आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का अनादर किया गया हो। क़ुर्आन शरीफ़ का अपमान होता हो। क्या आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का कुछ सम्मान अल्लाह तआला को स्वीकार नहीं था जो इतने अपशब्दों पर भी वह कोई आसमानी सिलसिला क़ायम न करता तथा इन इस्लाम के विरोधियों

के मुंह बन्द करके आप स. की प्रतिष्ठा एवं पवित्रता को दुनिया में फैलाता, जबकि स्वयं अल्लाह तआला एवं उसके फ़रिश्ते आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद भेजते हैं। अतः इस अभिव्यक्ति के लिए अल्लाह तआला ने इस सिलसिले को स्थापित किया। अतएव यह हमारा कर्त्तव्य है, जिन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को माना तथा इस सिलसिले में शामिल हुए कि जहाँ अपनी अवस्थाओं को ठीक करें वहाँ आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दरूद भी भेजें तथा इन दिनों में विशेष रूप से दरूद की ओर ध्यान रहना चाहिए। जब हम आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर अधिक से अधिक दरूद भेजेंगे तो उस उद्देश्य को पूरा करने वाले होंगे जो आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की प्रतिष्ठा एवं सम्मान को क़ायम करने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बयान फ़रमाया है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अपनी नियुक्ति का लक्ष्य बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि मुझे भेजा गया है ताकि मैं आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की खोई हुई प्रतिष्ठा का फिर से स्थापित करूँ तथा क़ुर्आन शरीफ़ की सच्चाई दुनिया को दिखाऊँ। यह सब काम हो रहा है किन्तु जिनकी आँखों पर पट्टी है वे इसको नहीं देख सकते यद्यपि अब यह सिलसिला सूरज की तरह रौशन हो गया है तथा इसकी आयतों व निशानों के लोग इतने अधिक साक्षी हैं कि उनको एक जगह एकत्र किया जाए तो उनकी संख्या इतनी हो जाए कि धरती के सीने पर किसी राजा की इतनी सेना नहीं है। विश्व के विभिन्न देशों में आज जलसों में हज़ारों अहमदियों का सम्मिलित होना भी इन निशानों में से एक निशान है। आप अलै. फ़रमाते हैं कि इस सिलसिले की सच्चाई की इतनी अधिक अवस्थाएँ मौजूद हैं कि उन सबको बयान करना भी सरल नहीं, चूंकि इस्लाम का अत्यधिक अपमान किया गया था इस लिए अल्लाह तआला ने उसी निरादर की तुलना में इस सिलसिले का महानता को दिखाया है।

फिर आप फ़रमाते हैं कि यह ज़माना भी आध्यात्मिक लड़ाई का है, शैतान के साथ युद्ध चल रहा है, शैतान अपने समस्त हथ्यिारों तथा षड्यन्त्रों को लेकर इस्लाम के क़िले पर आक्रमणकारी हो रहा है और वह चाहता है कि इस्लाम को पराजित कर दे किन्तु ख़ुदा तआला ने इस समय शैतान के अन्तिम युद्ध में उसको सदैव के लिए पराजित करने के लिए इस सिलसिले को स्थापित किया है। अतः यह बात प्रत्येक अहमदी को अपने कर्त्तव्य की ओर ध्यान दिलाती है। आप फ़रमाते हैं- मुबारक वह जो इसको पहचानता है। अब थोड़ा ज़माना है अभी सवाब मिलेगा, किन्तु निकट भविष्य में ही वह समय आता है कि अल्लाह तआला इस सिलसिले की सच्चाई को सूर्य से भी अधिक उज्जवल करके दिखाएगा, वह समय होगा कि ईमान सवाब का कारण नहीं होगा तथा तौबा का द्वार बन्द होने के समान होगा। अतः भाग्यशाली हैं वे लोग जो आज मसीह मौऊद अलै. को क़बूल कर रहे हैं तथा विरोध का सामना करके अल्लाह तआला के प्यार को प्राप्त करने वाले बन रहे हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि केवल मान लेना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि मूल उद्देश्य यह है कि एक पवित्र बदलाव पैदा हो, शुद्ध तौहीद पर क़दम मारने वाले इंसान बनें, तब फिर अल्लाह तआला के फ़ज़्ल बढ़त चले जाते हैं। जो व्यक्ति अल्लाह तआला से डर कर उसके मार्ग

की खोज में प्रयत्न करता है और दुआएँ करता है तो अल्लाह तआला अपने क़ानून- وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا अर्थात- और वे लोग जो हमारे बारे में कोशिश करते हैं, हम अवश्य उन्हें अपनी राहों की ओर हिदायत देंगे (सूरः अंकबूत-92) के अनुसार अपने मार्ग दिखा देता है। जब तक इंसान पवित्र मन एवं सच्चाई के साथ समस्त अवैध रास्तों को अपने ऊपर बन्द करके ख़ुदा तआला के आगे हाथ नहीं फैलाता उस समय तक वह इस योग्य नहीं होता कि अल्लाह तआला की सहायता एवं समर्थन उसको मिले। ख़ुदा तआला देखता है कि यदि उसका दिल हर प्रकार की लालसा से बचा हुआ है तो फिर उसके वास्ते अपनी रहमत के द्वार खोलता है तथा उसे अपनी छावँ में लेकर स्वयं उसके पालन पोषण का दायित्व लेता है, और यदि उसके दिल के किसी कोने में भी शिक एवं बिदअत (दीन में नई बातें घड़ना) का कोई अंश भी होता है तो उसकी दुआओं तथा इबादतों को उसके मुंह पर उलटा मारता है।

सहाबियों रज़ी. के जैसा नमूना अपनाने तथा उन जैसी निष्ठा एवं वफ़ा पैदा करने की ओर ध्यान दिलाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि जब अल्लाह तआला ने यह सिलसिला क़ायम किया तथा इसके समर्थन में सैंकड़ों निशान प्रकट किए हैं तो उद्देश्य यह है कि यह जमाअत सहाबियों की जमाअत हो और फिर से खैरुलक़ुरून (सर्वथा भलाई) का ज़माना आ जावे। जो लोग इस सिलसिले में दाख़िल हों, चूँकि वे وَآخَرِيْنَ مِنْهُمْ में दाख़िल होते हैं इस लिए वे झूठी गतिविधियों के कपड़े उतार दें और अपना पूरा ध्यान ख़ुदा तआला की ओर करें।

इस्लाम पर तीन ज़माने गुज़रे हैं, एक क़ुरूने सलासा (तीसरा ज़माना) इसके बाद फेजे आवज (बिगाड़) का ज़माना जिसके बारे में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि न वे मुझमें से हैं तथा न मैं उनसे हूँ और तीसरा ज़माना मसीह मौऊद अलै. का ज़माना है जो वास्तव में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़माना है और وَآخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ (सूरः जुम्अः4) स्पष्ट ज़ाहिर करता है कि कोई ज़माना ऐसा भी जो सहाबियों के आदर्शों के विरुद्ध है अर्थात उनके कर्म विभिन्न हैं। इस हज़ार साल के चलते इस्लाम अति कठिनाईयों का शिकार रहा, दीन बिगड़ता गया तथा कुछ लोगों के अतिरिक्त सबने इस्लाम को छोड़ दिया और अनेकों अनेक सम्प्रदाय पैदा हो गए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि अब अल्लाह तआला ने निश्चय किया है कि एक विशाल समूह को पैदा करे जो सहाबियों का गिरोह कहलाए मगर चूँकि ख़ुदा तआला का विधान यही है कि उसके द्वारा स्थापित सिलसिले में धीरे धीरे प्रगति हुआ करती है इस लिए हमारी जमाअत की उन्नति भी धीरे धीरे एवं खेती के समान होगी तथा वे उद्देश्य एवं लक्ष्य उस बीज के समान हैं जो ज़मीन में बोया जाता है, जो कि अभी अति दूर हैं जिन पर अल्लाह तआला इसको पहुंचाना चाहता है, वे प्राप्त नहीं हो सकते जिनकी स्थापना अल्लाह तआला का लक्ष्य है। तौहीद की स्वीकृति, अल्लाह की स्तुति तथा अपने भाईयों के हक़ अदा करने में एक विशेष रंग हो। अतएव ये हैं वे उद्देश्य जिनको पाने के लिए हमें चेष्टा करनी चाहिए और तभी जमाअत की उन्नति भी हम देखेंगे।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम क़ुर्आन करीम को विशेष ध्यान तथा समझ कर पढ़ने की ओर ध्यान दिलाते हुए फ़रमाते हैं कि याद रखना चाहिए कि क़ुर्आन शरीफ़ ने पहली किताबों एवं नबियों पर उपकार किया है जो उनकी शिक्षाओं को, जो कथाओं के रंग में थीं, इलमी रंग दे दिया। मैं सच कहता हूँ कि कोई व्यक्ति इन कथाओं एवं कहानियों से मुक्ति नहीं पा सकता जब तक कि वह क़ुर्आन शरीफ़ को न पढ़े क्यूँकि क़ुर्आन शरीफ़ की ही शान है कि वह एक निर्णायक कथन है। हमारे विरोधी केवल इसी कारण हमारे विरोध में तेज़ हैं कि हम क़ुर्आन शरीफ़ को जैसा कि ख़ुदा तआला ने फ़रमाया, वह पूर्णत्या प्रकाश, विवेक एवं सत्य की पहचान है, वैसा ही दिखाना चाहते हैं। क़ुर्आन शरीफ़ को अधिकता के साथ एक दर्शन-शास्त्र समझ कर पढ़ो। अतः इसके भावार्थ एवं अर्थ एवं व्याख्या की ओर हर एक अहमदी को ध्यान देना चाहिए।

अतः हमारा काम यह है कि आप अलै. के उपदेशों के अनुसार कर्म करें, यह अनिवार्य बात है अन्यथा बैअत का कोई औचत्य नहीं है। फ़रमाते हैं कि अब इस समय तुमने तौबा की है अब इस समय तुमने तौबा की है, अब भविष्य में ख़ुदा तआला देखना चाहता है कि इस तौबा से अपने आपको तुमने कितना साफ़ किया है। हर समय इस्तिग़फ़ार करते रहें। आजकल हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की दुआ बहुत पढ़नी चाहिए- قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنْفُسَنَا وَإِنْ لَمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ यह दुआ पहले से ही क़बूल हो चुकी है। मूर्छता के साथ जीवन व्यतीत मत करो। जो व्यक्ति मूर्छित होकर जीवन व्यतीत नहीं करता, कदाचित आशा नहीं कि वह किसी असहनीय शक्ति द्वारा आघात में पड़े। कोई कठिनाई अल्लाह की आज्ञा के बिना नहीं आती। जैसे मुझे यह दुआ इलहाम हुई थी- رب کل شی خادمك رب فاحفظنی وانصرنی وارحمنی यह भी दुआ, फ़रमाया- पढ़ो। अतः शैतान से बचते हुए अल्लाह तआला की शरण में आने का हमें प्रयत्न करना चाहिए। अतएव दुनिया का हर एक अहमदी इस बात पर विचार करे कि क्या हम वे हैं जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हमें बनाना चाहते हैं, यदि नहीं तो हमें हर समय इसके लिए कोशिश और दुआ करते रहना चाहिए। अल्लाह तआला हम सबको इसका सामर्थ्य प्रदान करे।

हुज़ूर-ए-अनवर ने अन्त में मुकर्रम फ़ज़ल अहमद डोगर साहब कारकुन जामिअः अहमदियः यू.के., मुकर्रम मलिक मंसूर अहमद उमर साहब मुरब्बी सिलसिला रबवा और मुकर्रम ईसा जोज़फ़ साहब मुअल्लिम सिलसिला गैम्बिया के देहान्त पर उनके सद्वर्णन तथा जमाअती सेवाओं का वर्णन करते हुए जनाज़े की नमाज़ पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا
مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا
عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ
وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ.

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क करें-9781831652

अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान के विषय में जानकारी के लिए टोल फ्री नम्बर-18001032131